

तारीख हुकम	हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज निगरानी/टीए/8371/2006/पाली पोकरराम बनाम डोली मंदिर श्री महादेवजी वगैरहा	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुकम की तामील में जारी हुए
	<p style="text-align: center;">एकल पीठ श्री प्रवीण गुप्ता, सदस्य</p> <p>उपस्थित- श्री वी.पी.सिंह, अधिवक्ता, प्रार्थी श्री गौरव दवे, अधिवक्ता, अप्रार्थीगण</p> <p style="text-align: center;">निर्णय दि० 16-12-2019</p> <p>यह निगरानी अन्तर्गत धारा 230 राजस्थान काश्तकारी अधिनियम, 1955 (संक्षेप में अधिनियम) के अन्तर्गत राजस्व अपील प्राधिकारी पाली द्वारा पारित निर्णय दिनांक 01-08-2006 के विरुद्ध प्रस्तुत की गई है।</p> <p>आलोच्य आदेशानुसार अधीनस्थ अपीलीय न्यायालय ने प्रार्थी की अपील को खारिज कर तहत न्यायालय के आदेश को यथावत रखा।</p> <p>हमने उभयपक्ष के अधिवक्ता की बहस पर मनन किया तथा उपलब्ध रेकार्ड तथा दोनों अधीनस्थ न्यायालयों द्वारा पारित निर्णयों का अवलोकन व अध्ययन किया है।</p> <p>प्रश्नगत प्रकरण में उपखण्ड अधिकारी देसूरी के समक्ष अप्रार्थी संख्या 1 ने एक प्रार्थना पत्र अन्तर्गत अधिनियम की धारा 212 के तहत प्रार्थी के विरुद्ध पेश किया। जिसे न्यायालय ने प्रकरण संख्या 31ए/2001 बउनवान डोली बनाम मंदिर श्री महादेवजी बनाम पोकरराम संस्थित किया। उपखण्ड अधिकारी ने अप्रार्थी द्वारा प्रस्तुत आलोच्य प्रार्थना पत्र को निर्णय दिनांक 30-09-2005 द्वारा स्वीकार करते हुए मौजा गुडा पृथ्वीराज के नये खसरा संख्या 305 रकबा 3-90 हैक्टर, खसरा संख्या 304 रकबा 0-03 हैक्टर कुल रकबा 3-93 हैक्टर भूमि पर वाद के निर्णय तक नायब तहसीलदार देसूरी को रिसीवर नियुक्त किया। इस</p>	

तारीख हुकम	हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज निगरानी/टीए/8371/2006/पाली पोकरराम बनाम डोली मंदिर श्री महादेवजी वगैरहा	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुकम की तामील में जारी हुए
	<p>निर्णय के विरुद्ध प्रार्थी द्वारा प्रथम अपीलीय न्यायालय के समक्ष अपील पेश की, जिसे अपीलीय न्यायालय ने आदेक्षित आदेश से अपास्त किया।</p> <p>न्यायालय के लिए दोनों पक्ष समान है, उभयपक्ष द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के आधार पर प्रकरण का अन्तिम निस्तारण होना शेष है। विचाराधीन मामला केवल मात्र अधिनियम की धारा 212 बाबत रिस्वीरी के संबंध में है। विचाराधीन प्रकरण में निम्न बिन्दु विचारणीय है।</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. क्या विवादित भूमि प्रोपर्टी इन मीडियो है (In medio) या नहीं ? 2. क्या विवादित भूमि के वेस्ट एवं डेमेज (Waste & damage) होने के पर्याप्त कारण है ? <p>रेकार्ड से स्पष्ट है कि प्रश्नगत रकबा जमाबंदी सम्वत 2020-2023 की जमाबंदी में डोली के नाम थी, जिसे बंदोबस्त विभाग ने प्रार्थी के नाम खातेदारी में दर्ज कर दी। यह भी प्रकट होता है कि प्रश्नगत रकबे बाबत मूल वाद की कार्यवाही लम्बित है तथा प्रार्थी आराजी को खुर्द-बुर्द करने का प्रयास कर रहे है।</p> <p>1984 आरआरडी पेज 01 में निम्न तीन बिन्दुओं पर अपना विनिश्चय दिया है:-</p> <p>(a) <u>Idol- Minor- R.T.Act, Secs. 5(25) Proviso & 46 (1)(e)</u>- Whether a deity is a minor for purpose of Sec. 46 and Proviso to Sec. 5 (25) or suffers from any mental or physical disability u/s 5(25) or incapable of cultivating land u/s 46 (1)(e)- Held deity is a minor for purpose of Sec 46(1)(a) and proviso to Sec. 5(25)- Question of infirmity and disabilities, not considered necessary to be examined since all minor enjoy protection u/s 46(1) (a).</p> <p>(b) <u>Raj. Tenancy Act. Ss. 46(1) & 16 (vi)</u> - Whether khatedari rights can at all accrue in lands held for public purpose and lands of deities can be considered to be held for public purpose- Held, properties endowed for an idol, essentially for public purpose and/ or public utility unless temple, essentially private- AIR 1957 SC 133, followed- Hence khatedari rights cannot accrue in such lands.</p> <p>(c) <u>Raj. Tenancy Act, Sec. 5 (25) Land cultivated personally</u>- Lands in muafi of deity, cultivated by a person, not being a pujari or manager, not a member of their family, nor a hired labour or servant- Held such land,</p>	

तारीख हुकम	हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज निगरानी/टीए/8371/2006/पाली पोकरराम बनाम डोली मंदिर श्री महादेवजी वगैरहा	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुकम की तामील में जारी हुए
	<p>included in definition of 'land cultivated personally' in sec 5(25).</p> <p>इसके अतिरिक्त 1994 आरआरडी पेज 01 रामप्रताप व अन्य बनाम राजस्व मण्डल में माननीय राजस्थान उच्च न्यायालय की खण्ड पीठ ने प्रतिपादित किया है कि:-</p> <p>"(B) Rajasthan Land Reforms & Resumption of Jagirs Act- (a) Section 2(i) and sub-section (23) of Section 5 of the Rajasthan Tenancy Act- When there was no provision in the law or in the proforma for preparation of the land records for the entry of the word 'khudkasht', the entry of merely the name of the khatedar in the column provided therefor (without the word 'khuddasht') did not detract from the 'khudkasht' nature of the tenure.</p> <p>(b) Section 2(k)- Land cultivated personally - It is settled law that an idol is a perpetual minor and, therefore, it is not expected to cultivate the land personally and in such a case, the land shall be deemed to be cultivated personally even in the absence of such personal supervision."</p> <p>प्रस्तुत मामले में न्यायिक दृष्टान्त 1984 आरआरडी पेज 01 एवं 1994 आरआरडी पेज 01 अवलोकनीय है, जिसमें प्रतिपादित किया गया है कि मूर्ति सदैव नाबालिग है तथा नाबालिग की भूमि पर जिसके द्वारा भी काशत की जाती है, वह मूर्ति द्वारा ही "Land cultivated personally" ही मानी जाएगी। राजस्व मण्डल की वृहद पीठ एवं माननीय राजस्थान उच्च न्यायालय के निर्णय में यह प्रतिपादित किया गया है कि मंदिर मूर्ति की भूमि पर अगर कोई अन्य व्यक्ति काशत करता है तो वह मंदिर मूर्ति के द्वारा ही काशत किया जाना माना जाएगा। फलतः मूर्ति मंदिर उन अपवादित श्रेणियों में शामिल है जिन पर राजस्थान काशतकारी अधिनियम की धारा 46 (1) (म) के अन्तर्गत परिणित होने के कारण भूमिधारक या कृषक के द्वारा किसी अन्य व्यक्ति से बतौर उपकृषक रहिन के रूप में कृषि कराने के लिए लगाये गये प्रतिबंध</p>	

तारीख हुकम	हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज निगरानी/टीए/8371/2006/पाली पोकरराम बनाम डोली मंदिर श्री महादेवजी वगैरहा	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुकम की तामील में जारी हुए
	<p>लागू नहीं होते है। वैसे भी नाबालिग के व्यापक हितों की सुरक्षा का दायित्व न्यायालय का होता है। यहीं नहीं राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 15 के तहत किसी भी व्यक्ति को मंदिर मूर्ति की भूमि पर खातेदारी अधिकार प्रदान नहीं किए जा सकते है।</p> <p>हस्तगत प्रकरण में माफी मंदिर मूर्ति की विवादित आराजी को बंदोबस्त विभाग ने बिना किसी सक्षम प्राधिकारी की आज्ञा/आदेश के प्रार्थी के पक्ष दर्ज कर दी है तथा वर्तमान में प्रार्थी द्वारा भूमि को खुर्द-बुर्द किए जाने का प्रयास किया जा रहा है। उपरोक्त सभी तथ्यों एवं कार्यवाहियों की परिप्रेक्ष्य में हमारी सुविचारित राय है कि अप्रार्थी के रिसीवर नियुक्ति के प्रार्थना पत्र को स्वीकार करने के उपरान्त उसके विरुद्ध प्रस्तुत अपील को आक्षेपित निर्णय द्वारा खारिज करने में अधीनस्थ अपीलीय न्यायालय ने किसी प्रकार की अनियमितता नहीं की है। सारांशतः प्रार्थी ने निगरानी मीमो में असंगत आधार अभिवचित करने के कारण उन्हें किसी प्रकार का अनुतोष देय नहीं है। अतः हमारी विनम्र राय में आक्षेपित निर्णय विधि सम्मत है, जिसमें निगरानी के माध्यम से किसी प्रकार का हस्तक्षेप अपेक्षित नहीं है। तदनुसार प्रस्तुत निगरानी सारहीन होना प्रकट होने के कारण इसे खारिज किया जाना न्यायोचित प्रतीत होता है।</p> <p>परिणामतः प्रस्तुत निगरानी खारिज की जाती है तथा राजस्व अपील प्राधिकारी पाली द्वारा पारित निर्णय दिनांक 01-08-2006 को यथावत रखा जाता है।</p> <p>निर्णय खुले न्यायालय में सुनाया गया।</p> <p style="text-align: center;">(प्रवीण गुप्ता) सदस्य</p>	

तारीख हुक्म	हुक्म या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज निगरानी/टीए/8371/2006/पाली पोकरराम बनाम डोली मंदिर श्री महादेवजी वगैरहा	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुक्म की तामील में जारी हुए